

विभाजन की स्मृति: महिलाएँ, मौखिक इतिहास और 1947 का भारत विभाजन

Tantan Kumar Thakur ^{1*}, Dr Arvind Kumar Verma ^{2**}

1. Research Scholar,
2. Professor and Head

* Faculty of Social Science (Department of History), Purnea University, Purnea, Bihar, India

** Faculty of Social Science (Department of History), Purnea University, Purnea, Bihar, India

Corresponding Author: Tantan Kumar Thakur

Email address:- tantanjan1993@gmail.Com

सारांश (Abstract): यह लेख भारत और पाकिस्तान के इतिहास में विभाजन को प्रस्तुत किए जाने के तरीकों में आए प्रमुख परिवर्तनों की पड़ताल करता है। विशेष रूप से यह यह विश्लेषण करता है कि पिछले पंद्रह वर्षों में किस प्रकार वैकल्पिक और मौन आवाज़ों/विभाजन के इतिहासलेखन में अधिक स्पष्ट और दृश्य हुई हैं।

इस बदलाव को संभव बनाया है **मौखिक गवाहियों (oral testimonies)**के उपयोग ने, जिनके माध्यम से आम लोगों के अनुभवों को दर्ज किया गया है। यह लेख यह दर्शाता है कि भारत और पाकिस्तान के इतिहास में इस घटना को समझने में **मौखिक इतिहास किस प्रकार एक क्रांतिकारी और सशक्त उपकरण**के रूप में उभरा है।

लेखक दक्षिण एशिया में अपने कार्यानुभवों और महिलाओं के इतिहास को समझने में मौखिक इतिहास की भूमिका पर भी चिंतन करता है।

[Thakur, T.K. and Verma, A.K. विभाजन की स्मृति: महिलाएँ, मौखिक इतिहास और 1947 का भारत विभाजन. *The International Journal of Interpretation, Observation and Analysis*, 2025; Volume 3, Issue 1:135-141 (July-September). ISSN 2349-0713, Peer-reviewed (online/offline), Refereed, Indexed and International Journal (Since 2013), Global Impact Factor: 5.776

Keywords: महिलाओं का इतिहास, विभाजन, प्रवास (या पलायन) पाकिस्तान

मौखिक इतिहास का उपयोग और विभाजन अध्ययन में इसका महत्व (हिंदी अनुवाद)

1990 के दशक से विभाजन अध्ययन (Partition Studies) में **मौखिक इतिहास के उपयोग में निरंतर वृद्धि** देखी गई है। यह प्रवृत्ति "नीचे से इतिहास" (history from below) की खोज की आवश्यकता से प्रेरित होकर लोकप्रिय हुई है। इसने विभाजन को समझने की दिशा को बदल दिया है—जहाँ पहले ध्यान केवल "महान पुरुषों" पर केंद्रित था, अब यह दृष्टिकोण आम लोगों के इतिहास को भी समेटने लगा है।

मौखिक इतिहास एक नए शोध उपकरण के रूप में इस परिवर्तन में अत्यंत महत्वपूर्ण रहा है। इसने यह समझने में मदद की है कि भारत में ब्रिटिश साम्राज्य के विघटन के उन उथल-पुथल वाले दिनों में **साधारण नागरिकों ने किस प्रकार का मानसिक, भावनात्मक और शारीरिक आघात** सहा। साथ ही इसने उन लोगों के अनुभवों को दर्ज करने का अवसर भी प्रदान किया है जो अब तक **खामोश, हाशिये पर पड़े, और आधिकारिक इतिहास से बाहर** रखे गए थे।

अब तक इस नए शोध का अधिकांश भाग **भारत तक सीमित** रहा है, विशेष रूप से **पंजाब क्षेत्र** में हुए घटनाक्रमों पर केंद्रित है। हालांकि कुछ अध्ययन **बंगाल, दिल्ली और पाकिस्तान के पंजाब** क्षेत्र पर भी हुए हैं। हाल ही में **तुलनात्मक अध्ययन** भी सामने आने लगे हैं, जहाँ **स्थानीय स्तर पर आधारित शोध** में प्रत्यक्ष साक्षात्कारों का उपयोग कर स्थानीय आवाज़ों को सामने लाया गया है।

इस लेख का उद्देश्य विभाजन के इतिहासलेखन (Partition historiography) में आए कुछ **मुख्य परिवर्तनों का अध्ययन करना** है—विशेष रूप से तब से जब **आधिकारिक अभिलेख (official records)** सार्वजनिक रूप से सुलभ कर दिए गए। लेख विशेष रूप से यह जांचता है कि **पिछले पंद्रह वर्षों में मौखिक इतिहास के बढ़ते उपयोग** ने विभाजन अध्ययन में **लैंगिक (gendered) दृष्टिकोण** को किस प्रकार परिवर्तित किया है और इस कालखंड ने **महिलाओं के जीवन को किस हद तक प्रभावित** किया।

अंततः, यह लेख **दक्षिण एशिया में मौखिक इतिहास पर कार्य करने के अनुभवों** पर और विशेष रूप से **पाकिस्तान में महिलाओं के साथ साक्षात्कार** करने के मेरे अनुभवों पर चिंतन करता है।

विभाजन, औपनिवेशिक सत्ता और इतिहासलेखन: एक आलोचनात्मक दृष्टिकोण (हिंदी अनुवाद)

औपनिवेशिक सत्ता (colonial power) ने पहले से मौजूद सांस्कृतिक एकता और सामाजिक मेलजोल को कमजोर कर दिया था, जो धार्मिक पहचान से परे जाकर समाज को जोड़ते थे। दूसरी ओर, **पाकिस्तानी लेखकों** के लिए एक **अलग मातृभूमिका** निर्माण इस इच्छा से उत्पन्न हुआ था कि वे हिंदू बहुल शासन की तानाशाही से दूर अपने सामुदायिक मूल्यों की रक्षा कर सकें।

"**फूट डालो और राज करो**" (Divide and Rule) और "**दो-राष्ट्र सिद्धांत**" (Two-Nation Theory) से उपजे वैचारिक रूप

सेअसंगत विमर्श स्वतंत्रता के बाद भारत और पाकिस्तान केआपसी संबंधों की रूपरेखा तय करनेमें सहायक बने। प्रारंभिक इतिहासलेखन का अधिकांश भाग "उच्च राजनीति" (high politics) पर केंद्रित रहा , जो सत्ता हस्तांतरण की प्रक्रिया के साथ जुड़ी थी। इसका एक कारण यह भी था कि उस समय उपलब्ध स्रोत सीमित थे; शुरुआती विवरण मुख्य रूप से प्रमुख नेताओं के आत्मकथात्मक अनुभवों पर आधारित थे।

हालाँकि, इसमें एक बहुत बड़ी कमीथी—और वह थी आम लोगों की आवाज़ों की अनुपस्थिति , तथा यह कि ऊँची राजनीति ने समाज के निचले तबकों को किस प्रकार प्रभावित किया। इस खाली स्थान को आंशिक रूप से साहित्य और सिनेमाने भरा।

उपन्यास और कहानियाँ, संभवतः एकमात्र माध्यम थीं जिनके द्वारा विभाजन की भावनात्मक, पीड़ादायक और धार्मिक रूप से संवेदनशील घटनाओं को चित्रित किया जा सका —विशेष रूप से उन देशों में जो स्वयं धार्मिक आधार पर विभाजित हुए थे।

इतिज्ञार हुसैन, भीष्म साहनी, सआदत हुसन मंटो, औरअमृता प्रीतमजैसे लेखक अपने स्वयं के विस्थापन के अनुभवों से लिख रहे थे और उन्होंने विभाजन के मानवीय नाटकीय पहलू को बखूबी पकड़ा।

आधिकारिक इतिहास (official histories) में, भारत और पाकिस्तान दोनों ने 1947 के अगस्त में हुई हिंसा के लिएदोषारोपण को स्थानांतरित करने के उद्देश्य से दस्तावेज तैयार किए। यद्यपि इन दस्तावेजों में पक्षपात है , फिर भी ये इतिहासकारों के लिए उपयोगी हैं।

खोसलाकी रिपोर्ट (1949) विभाजन की हिंसा को दर्ज करने के सबसे प्रसिद्ध प्रयासों में से एक है। उन्होंने आंखों-देखी गवाहियोंका उपयोग करते हुए दंगों की भीषणता और भयावहताको सामने रखा।

पाकिस्तान में , सरकार द्वारा कई प्रकाशन ऐसे आए जिनमेंपूर्वी पंजाब में मुसलमानों पर हुई हिंसा को एककथित "सिख योजना"के तहत समझाया गया।

खानका अध्ययन भी उल्लेखनीय है , जिसमेंपाकिस्तानी शरणार्थियों के प्रत्यक्ष अनुभवोंको दर्शाया गया है—जैसे कि वे कैसे उजड़ गए और किन परिस्थितियों से गुज़रे। यद्यपि खान और खोसला दोनों की रिपोर्टों में कई पक्षपात हैं , फिर भी इन दोनों के संयुक्त प्रभाव से विभाजन के बाद के स्थानीय और व्यक्तिगत अनुभवोंकी कुछ समझ मिलती है।

यह अध्ययन उस समय के आधिकारिक नेताओं के आत्मवृत्तोंसे भिन्नएक वैकल्पिक दृष्टिकोणभी प्रस्तुत करता है।

भारत और पाकिस्तान दोनों के लिए यह ज़रूरी था कि वे एकस्वतंत्र राष्ट्रीय पहचान स्थापित करें ; अतीत की पुनर्चनाऔरएक नया राष्ट्रीय इतिहासरचकर इस पहचान को

उभारा जा सकता था और नवगठित राष्ट्र-राज्य को वैधता दी जा सकती थी।

इसलिए, गांधी, जिन्ना और नेहरू जैसे "महान पुरुषों" का महिमामंडनभारत और पाकिस्तान के स्वतंत्रता-पूर्व और पश्चात इतिहासमें प्रमुखता से हुआ।

हालाँकिक्षेत्रीय अध्ययन (Regional Studies) में कुछ महत्वपूर्ण प्रगति हुई है , लेकिन अब भी ध्यान मुख्यतः इस बात पर केंद्रित रहा है कि विभाजन क्यों हुआ, न कि इस पर कि इसनेसाधारण नागरिकों के जीवन को कैसे प्रभावित और परिवर्तित किया।

राष्ट्रीय नेतृत्व (national leadership) का प्रभाव , और त्रिटिशों व भारतीय नेतृत्व के बीच के रिश्तों ने , विभाजन की समझ को गहराई से प्रभावितकिया है।

महिलाएँ, मौखिक इतिहास और विभाजन

विभाजन के "नए इतिहास" की उत्पत्ति मुख्यतः स्त्रीवादी लेखनसे हुई है , जिसने विभाजन के कारणों की व्याख्या से आगे बढ़ते हुए , एक अधिक सूक्ष्म समझ विकसित करने की दिशा में मार्ग प्रशस्त किया —एक ऐसी समझ जो इस ऐतिहासिक घटना के आम लोगों के जीवन पर पड़े प्रभावों को समाहित करती है।

विभाजन के इस नए इतिहास में जो बात विशेष रूप से उल्लेखनीय है , वह यह है कि , यद्यपि पूरी तरह नहीं , परंतुमुख्य रूप से महिला लेखक और विद्वान ही हैं जिन्होंने मौखिक इतिहास को अपनाया है। संभवतः इसका कारण विषय कीसंवेदनशील प्रकृतिऔरजीवन-कथाओं तथा मानवीय पहलुओंको पकड़ने की कोशिश है , जो स्त्री-दृष्टि से अधिक सहजता से जुड़ती है।

और इससे भी महत्वपूर्ण यह है कि यह एक नई पीढ़ी के लेखकों द्वारा किया गया एक सक्रिय प्रयास है कि वे विभाजन को समझने और उस पर केंद्रित होने की हमारी दृष्टि को पुनः निर्देशित करें। स्त्रीवादी दृष्टिकोण से मौखिक इतिहास को अपनाना, पारंपरिक स्रोतों में महिलाओं की आवाज़ों कीअनदेखी के प्रति एक प्रतिक्रियारही है।

इस प्रकार, मौखिक इतिहास ने एक ऐसा अवसर प्रदान किया है जिसके माध्यम से महिलाओं को ऐतिहासिक विमर्श में सम्मिलितकिया जा सका —यहाँ तक कि इसने सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक महत्त्व की प्रचलित परिभाषाओं को चुनौतीदी है , जिन्होंने महिलाओं के जीवन को अस्पष्ट और गौण बना दिया था। इतिहास मेंलैंगिक दृष्टिकोण के महत्त्वको स्वीकार करना और इसे केंद्रीय स्थान देना इस अनुशासन मेंप्रचलित प्रवृत्तियों को चुनौती देने का महत्वपूर्ण विकास है।

इस दिशा मेंशैला रोबोथमकी धारणा प्रासंगिक है—वे कहती हैं किऐतिहासिक विमर्श में महिलाओं के अनुभव अक्सर "छिपे हुए"होते हैं , औरनिजी गवाहियाँ जैसे नए पद्धतिगत उपकरणहमें उन ऐतिहासिक व्याख्याओं को चुनौती देने की

अनुमति देते हैं जो पुरुषों के जीवन और दस्तावेजों पर आधारित रही हैं।

स्त्रीवादी व्याख्याएँ, जिन्होंने महिलाओं और भारतीय समाज के अन्य हाशिये पर स्थित समूहों की दुर्दशा पर ध्यान केंद्रित किया, ने विभाजन-विमर्श में पुनर्मूल्यांकनको संभव बनाया। उन्होंने इस भीषण समय में महिलाओं के अनुभवों को सामने लाया और अपहरण, बलात्कार और लैंगिक हिंसा जैसे संवेदनशील और वर्जित विषयों की कठोर वास्तविकताओं को उजागर किया — जो अब तक एक पितृसत्तात्मक समाज में सार्वजनिक चर्चा से बाहर रहे थे। हालाँकि विभाजन से पहले और स्वतंत्र भारत तथा पाकिस्तान में स्त्रीवादी विमर्श पहले से मौजूद था, फिर भी विभाजन के दौरान महिलाओं पर हुई हिंसा को राष्ट्रवादी और राजनीतिक इतिहास में हाशिये पर रखी गया। जैसा कि पहले उल्लेख किया गया, विभाजन के इतिहासलेखन में यह परिवर्तन 1980 के दशक में उपन्यस्त (subaltern) प्रभावों के साथ प्रारंभ हुआ, और लगभग एक दशक बाद और अधिक स्पष्ट रूप से सामने आया — पहले रितु मेनन और कमला भसीन के 1993 में *Economic and Political Weekly* में प्रकाशित लेख के माध्यम से, और फिर 1998 में प्रकाशित *Borders & Boundaries* तथा उर्वशी बुटालिया की पुस्तक *The Other Side of Silence* के ज़रिए।

इन महत्वपूर्ण स्त्रीवादी कृतियों ने विभाजन के दौरान महिलाओं की पीड़ा से जुड़े विमर्श को पुनर्संचित करने में महती भूमिका निभाई। उन्होंने इन "छिपे हुए इतिहासों" को सामने लाकर सार्वजनिक बहसका हिस्सा बनाया और राष्ट्र को उसके जटिल और विवादास्पद अतीतसे जूझने की चुनौती दी। इन दोनों पुस्तकों में महिलाओं की प्रत्यक्ष गवाहियाँ (first-hand accounts) विभाजन से जुड़ी हिंसा और जन-प्रवास की मानवीय त्रासदी को उजागर करने का मुख्य माध्यम बनीं। व्यापक दृष्टिकोण से देखें तो इन विवरणों ने परंपरागत इतिहासों को चुनौती दी, जिन्होंने महिलाओं और अन्य उपन्यस्त समूहोंको हाशिये पर रखा था।

पार्थीवी बच्छेत्ता (Paola Bacchetta) इससे भी आगे जाकर यह सुझाव देती हैं कि ये स्त्रीवादी गवाही "एक भिन्न प्रकार के उपन्यस्त लेखन"को दर्शाती हैं, जो अनजाने में ही उस उपन्यस्त लेखन को चुनौती देती हैं जिसने अब तक महिलाओं को दरकिनार किया।

इस "नए विभाजन इतिहास"की दो प्रमुख विशेषताएँ हैं:

1. यह मुख्यतः भारत-केंद्रित है... (यहाँ पर अंश अधूरा है)

पाकिस्तान में महिलाओं, विभाजन और मौखिक इतिहास का अभाव

पाकिस्तान में महिलाओं को लेकर तुलनात्मक रूप से बहुत कम लिखा गया है।

निघत सईद खान, जो लाहौर की एक सामाजिक कार्यकर्ता हैं,

नेसिंध क्षेत्र की महिलाओं के साथ कुछ साक्षात्कार किए हैं, परंतु ये साक्षात्कार अब तक बड़े पैमाने पर अप्रकाशित हैं। हाल ही में, मैंने इस महत्वपूर्ण शून्य को भरने का प्रयास किया है—विशेषकर पाकिस्तानी पंजाब में महिलाओं के विभाजन और पुनर्वास के अनुभवों का दस्तावेजीकरण करने के संदर्भ में। मेरा कार्य विशेष रूप से इस बात की पड़ताल करता है कि इन अनुभवों को सार्वजनिक और निजी क्षेत्रों में किस प्रकार दर्ज किया गया है।

दूसरी बात यह है कि अब तक किए गए अधिकांश कार्यों ने मुख्य रूप से पंजाबी समुदाय की दुर्दशा को दर्ज करने का प्रयास किया है। यद्यपि यह तर्क दिया जा सकता है कि इस क्षेत्र ने विभाजन की सबसे भीषण हिंसा झेली, फिर भी विभाजन इतिहासलेखन में यह शोध भौगोलिक रूप से सीमित है।

हालाँकि, अलीया ज़मिंदार का कार्य एक महत्वपूर्ण अपवाद है, जो दिल्ली और कराची में विभाजन द्वारा विभाजित हुए परिवारों की व्यक्तिगत कथाओं के माध्यम से इस त्रासदी को जोड़ता है।

हाल ही में, बंगाल पर भी कुछ कार्य सामने आए हैं, और यासमीन सईकिया ने 1972 के बांग्लादेश युद्ध के दौरान महिलाओं पर पड़े प्रभावों का अध्ययन किया है।

लेकिन इन कुछ उल्लेखनीय प्रयासों के अतिरिक्त, अब भी विभाजन और स्वतंत्रता के समय उत्पन्न उथल-पुथल के कई अनछुए, कम जाने-पहचाने अनुभवों के इतिहास शेष हैं— जो अब तक अनदेखे और अप्रकाशित हैं।

मौखिक इतिहास, महिलाओं की आवाज़ें, और इतिहासलेखन में लोकतांत्रिक विस्तार

मौखिक इतिहास (Oral History) का उपयोग, विशेष रूप से सामान्य जीवन (everyday life) को समझने के लिए, अत्यंत महत्वपूर्ण रहा है—जो अक्सर आधिकारिक अभिलेखों में अनुपस्थित रहता है। एक शोध पद्धति के रूप में, मौखिक इतिहास ने दस्तावेजी स्रोतों का प्रतिस्पर्धी नहीं, बल्कि पूरक के रूप में कार्य किया है।

उदाहरणस्वरूप, अपने शोध के दौरान मैंने पाया कि यद्यपि निर्वासित व्यक्तियों के राहत एवं पुनर्वास मंत्रालय और समन्वय एजेंसी 1947 के दौरान महिलाओं और बच्चों के अपहरण की घटनाओं की जांच कर रहे थे, परंतु उनके दस्तावेज़ इन महिलाओं के बारे में कुछ भी विशेष प्रकट नहीं करते थे।

इन रिकॉर्ड्स में इस बात की कोई जानकारी नहीं थी कि:

- उन महिलाओं की व्यक्तिगत परिस्थितियाँ क्या थीं,
- जब उन्हें वापस लाया गया तो उन्होंने कैसे प्रतिक्रिया दी,
- और बाद में उनके साथ क्या हुआ।

ऐसे में मौखिक गवाहियाँ इस अनकहे पक्ष को भरने का काम करती हैं और इतिहासकार को यह अवसर देती हैं कि

वहकेवल राजनीतिक इतिहास (जैसे—सरकारी पुनर्प्राप्ति योजनाएँ) ही नहीं, बल्कि उससे जुड़े सांस्कृतिक, सामाजिक और मानवीय प्रभावोंका भी अध्ययन कर सके।

मौखिक साक्ष्य आधिकारिक स्रोतों के साथ मिलकर विभाजन की एकसमग्र और गहराई से समझप्रदान करते हैं।

सिर्फ आंकड़ों के आधार पर यह जानना कि महिलाओं का जीवन कैसे उजड़ा और फिर उन्होंने उसे कैसे फिर से खड़ा किया—यह अधूरा होता। मौखिक इतिहास हमें उस घटना के बाद के प्रभावोंको दर्ज करने का अवसर देता है, सिर्फ घटना को नहीं।

इसके साथ ही, स्थानीय स्तर पर विस्तृत अध्ययन (grassroots case studies)करना अत्यंत कठिन हो जाता है जब स्थानीय रिकॉर्ड अनुपलब्ध हों—खासकर जब उन्हें 1947 जैसे समय में जानबूझकर नष्ट कर दिया गया हो।

इसलिए, मौखिक गवाहियाँ एक महत्वपूर्ण सूचना स्रोत बन जाती हैं और साथ ही वे हमें आम लोगों की दृष्टि और अनुभवको समझने का अवसर भी देती हैं।

और जब बात महिलाओं की आवाज़ों की आती है—जिन्हें अक्सर हाशिये पर रखा गया है—तो मौखिक इतिहास का महत्व और भी बढ़ जाता है। यह उन अनकहे अनुभवों को अभिव्यक्ति देने की शक्ति देता है, जो अन्यथा दस्तावेज़ों में दर्ज नहीं होते।

साथ ही, यह पूरी प्रक्रिया अब तक केवल "उच्च राजनीति" तक सीमित रहे इतिहास-विमर्शकोलोकतांत्रिकबनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

लायलपुर, प्रवासी अनुभव और मौखिक इतिहास के माध्यम से विभाजन की समझ

लायलपुर (अब फ़ैसलाबाद, पाकिस्तान) उन प्रवासियों की वजह से महत्वपूर्ण बन गया, जिन्होंने इस क्षेत्र में आकर बसने के साथ-साथ इन स्थानों को रूपांतरितकिया।

दस्तावेज़ोंमें जनसंख्या विस्थापन के स्तर, शरणार्थी संकट से निपटने में सरकारी प्रतिक्रियाएँ, औरआवास पुनर्निर्माण जैसे तथ्यों को दर्ज किया गया

, लेकिनमौखिक गवाहियाँ उन लोगों के वास्तविक अनुभवों की झलक प्रदान करती हैं—विस्थापन के प्रभाव, अनुकूलन की प्रक्रिया, और अंततः ये शहर अगस्त 1947 के बाद कैसे बदल गए।

मैंने भारत और पाकिस्तान, दोनों में, ग्रामीण और शहरी क्षेत्रोंसे, पुरुषों और महिलाओं, दोनों की मौखिक गवाहीएकत्र की है।

मेरेडॉक्टरल शोध के लिए, मैंने विशेष रूप से लुधियाना (भारत) और लायलपुर (पाकिस्तान) जैसे स्थानों पर ध्यान केंद्रित किया—और उनमें भी उन इलाकों पर, जहाँशरणार्थियों का भारी पुनर्वासिआ था।

इन क्षेत्रों में पहुँचने के बाद, ऐसे लोगों को ढूँढना कठिन नहीं था, जो भारत या पाकिस्तान में प्रवासित हुए हों।

यह प्रक्रिया अपने आप में "सोबॉलिंग"बन गई—एक व्यक्ति से दूसरे तक साक्षात्कार बढ़ते चले गए और एक सीमित भौगोलिक क्षेत्र में कई साक्षात्कार संपन्न हुए।

कुछ साक्षात्कार सुनियोजित लक्ष्य के साथ किए गए—विशेषकरपाकिस्तान में शरणार्थी पुनर्वास से जुड़ी महिलाओंके साथ बातचीत के लिए यह दृष्टिकोण उपयोगी सिद्ध हुआ।

अधिकांश प्रतिभागियों को काल्पनिक नाम (pseudonyms)दिए गए, लेकिन कुछ मामलों में—जहाँ व्यक्ति के विचार पहले से ही सार्वजनिक क्षेत्र में उपलब्ध थे या उनकी पहचान कथा का हिस्सा थी—वहाँवास्तविक नामप्रकट किए गए।

मेरे अधिकांश साक्षात्कार पंजाबी में किए गए और बाद में उन्हेंअंग्रेज़ी में अनुवाद और ट्रांसक्रिप्शन किया गया।

यह प्रक्रिया समय-साध्य थी, लेकिन एक शोधकर्ता के रूप में मेरे लिए बेहद महत्वपूर्ण रही—क्योंकि इसने मुझे साक्षात्कार की सामग्री से गहराई से जुड़ने का अवसर दिया और प्रक्रिया पर आत्मचिंतनका भी समय मिला।

स्थानीय बोली बोलने की क्षमता एक विशेष लाभ है—विशेष रूप से वहाँ, जहाँभाषा एक अत्यंत भावनात्मक और राजनीतिक विषय

हो। इससे साक्षात्कारकर्ता को प्रतिभागी के साथ विश्वास और जुड़ाव स्थापित करनेमें मदद मिलती है।

हालाँकि, स्थानीय अनुवादक के माध्यम से किए गए साक्षात्कारकुछ हद तक उपयोगी होते हैं, लेकिनबहुत बार अर्थ और भावना के सूक्ष्म संकेत (sub-text)अनुवाद में खो जाते हैं।

स्वयं साक्षात्कार लेना, औरप्रत्यक्ष भाव-भंगिमाओं एवं शब्दोंकी प्रतिक्रियाओं को समझ पाना—यह प्रक्रिया कीगंभीरता और प्रामाणिकताको बढ़ाता है।

दिलचस्प रूप से, हैमिल्टनमौखिक इतिहास साक्षात्कारों मेंभावनाओं का विश्लेषणकरने का प्रयास करते हैं।

पाकिस्तान में साक्षात्कार का व्यक्तिगत अनुभव पाकिस्तान में साक्षात्कार लेना शुरू में मेरे लिए चुनौतीपूर्ण था।

मेरी पृष्ठभूमि—पूर्वी अफ्रीकी, भारतीय और ब्रिटिश—ने मुझे एकतटस्थ स्थिति अपनाने की सहूलियत दी, लेकिन फिर भी कुछ शब्द या वाक्यांश मुझे "भारतीय" के रूप में चिन्हितकर देते थे।

यह समस्या उत्पन्न करती थी, क्योंकि तब मैं एक तटस्थ और वस्तुनिष्ठ शोधकर्ता नहीं रह जाता, बल्कि मुझे "दूसरे" (other)पक्ष के रूप में देखा जाता।

हालाँकि, कभी-कभी इसी क्षेत्रीय पहचान ने मुझे कुछ प्रतिभागियों से और अधिक आसानी से जोड़ दिया, विशेषकर जब हम एक ही बोली में संवाद कर रहे थे—यह अनुभवआत्मीयता और विश्वासको बढ़ाता था।

स्मृति, संवेदना और मौखिक इतिहास की नैतिक जटिलताएँ अधिकांश प्रतिभागी 1940 के दशक की घटनाओं और स्मृतियों का वर्णन कर रहे थे, इसलिए यह सवाल उठता है कि क्या वे घटनाओं को सटीक रूप से पुनः प्रस्तुत कर पा रहे थे या नहीं।

स्मृति की विश्वसनीयता और घटनाओं को याद करने की क्षमता को लेकर स्पष्ट चिंताएँ हैं और यह स्थिति उस समय और भी जटिल हो जाती है जब माहौल राजनीतिक रूप से संवेदनशील और राष्ट्रवादी उत्साह से भरा हो।

इसके अतिरिक्त, यह आशंका भी रहती है कि लोग जानबूझकर अपने अनुभवों को बदल सकते हैं या बढ़ा-चढ़ा कर प्रस्तुत कर सकते हैं—विशेष रूप से यदि उन्हें लगता है कि इससे साक्षात्कारकर्ता को संतुष्ट किया जा सकता है हालाँकि, मेरी सबसे बड़ी चिंता नैतिक थी: क्या हमें लोगों से आग्रह करना चाहिए कि वे इतने गहरे और दर्दनाक अनुभवों को याद करें जैसे कि:

- साम्प्रदायिक नरसंहार
- महिलाओं का अपहरण
- और स्वतंत्रता के बाद जबरन प्रवास

कई लोगों के लिए यह काल अब भी इतना त्रासदपूर्ण है कि उस पर बात करना संभव नहीं।

वास्तव में, कुछ प्रतिभागी इस अनुभव से भावनात्मक रूप से विचलित हो गए, और कुछ साक्षात्कारों में सच्चाई मुझसे छिपा ली गई, क्योंकि वह विषय बहुत संवेदनशील था।

यह मुझे केवल गैर-आधिकारिक पारिवारिक बातचीतों के माध्यम से पता चला, जब परिवार के अन्य सदस्यों ने मुझे बताया कि कुछ बातें जानबूझकर नहीं बताई गई थीं।

उदाहरण के तौर पर:

- एक बार मुझे बाद में पता चला कि साक्षात्कारदाता खुद हिंसा और लूटपाट में शामिल था,
- और एक अन्य मामले में, एक भतीजी के अपहरण और बलात्कार के विषय में पूरी तरह चुपकी साध ली गई थी।

यह विषय आज भी बेहद संवेदनशील है, और लोग—चाहे उनका धार्मिक पृष्ठभूमि कुछ भी हो—इस पर आसानी से बात नहीं करते।

कई बार लोग किसी मित्र या दूर के रिश्तेदार की कहानी सुनाते हैं—ताकि उस अनुभव और उससे जुड़ी लज्जा या अपमान से थोड़ा भावनात्मक दूरी बनाई जा सके।

ताहिरी मज़हर अली के साथ एक साक्षात्कार में हमने इस पर चर्चा की कि

"महिलाओं की पुनर्प्राप्ति की प्रक्रिया (recovery process)" कितनी जटिल रही—

और इसका मुख्य कारण था इस पूरे अनुभव से जुड़ा सामाजिक कलंक और शर्मिंदगी

निष्कर्ष

मौखिक इतिहास का महत्व इस बात में निहित है कि यह इतिहासकार को औपचारिक और व्यक्तिगत अनुभवों को जोड़ने का अवसर देता है।

यह वह मानवीय पक्ष प्रस्तुत करता है, जो अक्सर राजनीतिक इतिहास की मुख्यधारा में अनुपस्थित होता है।

जीवित लोगों के माध्यम से, मौखिक इतिहास हमें वर्तमान को अतीत से जोड़ने में मदद करता है—और यही एक मूलभूत उद्देश्य होता है इतिहासकार के लिए।

साथ ही, इस पद्धति का एक लोकतांत्रिक और प्रेरणादायक पक्ष भी है—क्योंकि इसमें उन बाधाओं का सामना नहीं करना पड़ता जो हमें सरकारी अभिलेखागार तक पहुँचने में होती हैं, विशेष रूप से वे रिकॉर्ड जिन्हें "संवेदनशील" समझकर रोक दिया गया हो।

सरकारी अभिलेखों की समस्याएँ कई स्तरों पर हैं—एक तो यह कि दस्तावेजों की जानकारी और जागरूकता का अभाव है, दूसरे, कई राज्य और प्रांतीय अभिलेखागार संसाधनों की कमी के कारण अपर्याप्त और अक्षम हैं।

इसके अतिरिक्त, 1947 के बाद के राष्ट्रवादी इतिहास ने सार्वजनिक अभिलेखों का राजनीतिकरण कर दिया है,

और इस कारण सरकारें इन रिकॉर्ड्स को लेकर अत्यधिक संवेदनशीलता दिखाती हैं।

दोनों राष्ट्र-राज्य इस अवधि को अपने-अपने श्रेष्ठ रूप में प्रस्तुत करना चाहते हैं।

इसलिए जो कुछ भी राज्य की भूमिका पर प्रश्नचिह्न लगा सके, उसके प्रति संरक्षणवादी दृष्टिकोण अपनाया गया है।

ऐसे में व्यक्तिगत कथाएँ हमें महिला जीवन के निजी क्षेत्रों में प्रवेश कर

उन इतिहासों को दर्ज करने का अवसर देती हैं जो अन्यथा हमेशा छिपे रहते।

हालाँकि, पारंपरिक इतिहास में एक प्रकार का अभिजात्यंत्र (elitism) मौजूद है—जहाँ प्रामाणिक दस्तावेजों को मौखिक साक्ष्यों से अधिक महत्व दिया जाता है,

फिर भी दोनों विधाएँ—दस्तावेज़ीय और मौखिक—महत्वपूर्ण हैं, क्योंकि ये हमें अतीत को समझने और प्रस्तुत करने के विभिन्न तरीके प्रदान करती हैं।

पारंपरिक इतिहास, जो प्रामाणिक साक्ष्यों पर आधारित होता है,

हमें अतीत को संदर्भित और संरचित करने में मदद करता है और "बड़ी तस्वीर" प्रस्तुत करता है।

लेकिन इस पद्धति का एक संकट यह है कि यह "महान पुरुषों" और उनके निर्णयों पर केंद्रित हो जाती है।

पाकिस्तान के संदर्भ में, यह विशेष रूप से स्वतंत्रता के समय महत्वपूर्ण था—

एक नव-निर्मित राष्ट्र को एकजुट करने के लिए इतिहास

कोरेखीय (linear)रूप में गढ़ा गया ,
जहाँ विचारों , मिथकों और घटनाओं को समेटकर
एकसांस्कृतिक-राजनीतिक राष्ट्र की संकल्पनाची गई।
इन"महान पुरुषों"में जिन्ना, लियाकत अली, नेहरू, गांधी जैसे
नेता शामिल हैं ,
जिन्होंने उस समय राष्ट्र-निर्माण के प्रतीक के रूप में कार्य
किया।
लेकिनसाठ साल बाद , जब राज्य अब भी संवेदनशील और
अस्थिरहै,
तबपारंपरिक इतिहास से कोई भी विचलन संभावित रूप से
खतरनाकमाना जाता है।
इस प्रक्रिया में महिलाओं की भूमिका पूरी तरह से हाशिए पर
डाल दी गई।
दस्तावेजों से विभाजन के दौरान महिलाओं पर पड़े प्रभावोंको
समझनासीमित रूप में ही संभव है।
यहीं पर मौखिक इतिहास एक वैकल्पिक इतिहास गढ़ने का
साधनबन जाता है।
यह हमें अतीत की उन वैचारिक व्याख्याओंको चुनौती देने का
अवसर देता है ,
जिन्हेंएक रेखीय, एकरेखीय या विकृत राष्ट्रवादी परिप्रेक्ष्य के
तहतया तो नजरअंदाज़ किया गया या नष्ट कर दिया गया
महिलाओं की आवाज़ें और वैकल्पिक इतिहास की संभावनाएँ
जब हम महिलाओं को बोलने का अवसर देते हैं , तो यह
हमेंएक सामाजिक-सांस्कृतिक इतिहास को जोड़ने
काअवसरप्रदान करता है —
ऐसे जीवन के इतिहास , जो अक्सरनिजी क्षेत्रों तक सीमितरहे
हैं,
लेकिन फिर भी, ऐसे जीवन जिन्होंनेनवगठित पाकिस्तान राष्ट्र
के निर्माणमें महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।
ओरल हिस्ट्री नामक पत्रिका के एक हालिया लेख में , ग्लुक
(Gluck)ने यह प्रश्न उठाया था —
क्यानारीवादी मौखिक इतिहास ने
अपना'क्रांतिकारी/उपवर्जित (subversive)'स्वर खो दिया
है?।
पाकिस्तान से प्राप्त ये व्यक्तिगत कथाएँ दिखाती हैं कि अभी
भीप्रगति की आवश्यकता है ,
लेकिन फिर भी ये इतिहासकार को वैकल्पिक आख्यानोकी एक
झलक प्रदान करती हैं —
और यह अनिवार्य है यदि हमें पुराने इतिहासों को चुनौतीदेना
और उन्हेंपुनः मूल्यांकितकरना है।
ये अनुभव हमें यह समझने का भी अवसर देते हैं कि
विभाजन के कठिन समय में महिलाओं के जीवन कितनेसूक्ष्म
और जटिलरहे हैं।
यह दृष्टिकोण , विभाजन के दौरान महिलाओं को
केवल"पीड़िता" के रूप में चित्रित करने की प्रवृत्तिको चुनौती
देता है ,

और इसके बजाय यह संकेत देता है कि वास्तविकता में
महिलाएँ कई भूमिकाएँ निभा रही थीं
उदाहरण के लिए, फातिमा सुगराकी कहानी हमें यह दिखाती
है कि कैसे एक मध्यम वर्गीय युवती ,
जोप्रभावशाली महिला नेतृत्व से प्रेरित थी ,
मुस्लिम पृथकतावादी आंदोलन (Muslim separatist
movement)कीप्रतीकबन गई।
यह आंदोलन —और इसके बाद हुआ विभाजन —ने कई
महिलाओं कोराजनीतिक रूप से सक्रिय होनेका अवसर दिया,
और इसके माध्यम से वे सार्वजनिक जीवन में अधिक दिखाई
देने लगीं।
यहाँ प्रस्तुत किए गए अनुभव यह तो दिखाते ही हैं
किमहिलाओं के इतिहास को किनारे किया गया ,
और कई बार महिलाओं ने भी स्वयं इसे अंतःकरण में
आत्मसातकर लिया।
लेकिन इससे भी महत्वपूर्ण बात यह है कि ये कथाएँ इस बात
को भी रेखांकित करती हैं कि
महिलाओं ने बाधाओं के बावजूद अपने लिए स्थान बनाने और
मार्ग गढ़ने की सक्रिय कोशिश की।
यही वैकल्पिक स्थान (alternative spaces)—
जहाँ महिलाएँ अपने अनुभवों , संघर्षों और भूमिकाओं को स्वयं
रचती हैं —
हमें एकनया इतिहास गढ़नेकी ओर ले जाते हैं।

टिप्पणियाँ (NOTES)

1. गोपाल दास खोसला , *स्टर्न रेकनिंग्स: सर्वे ऑफ इवेंट्स लीडिंग अप टू एंड फॉलोइंग द पार्टिशन ऑफ इंडिया*, नई दिल्ली: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 1949; पुनर्मुद्रण 1989।
2. पाकिस्तान सरकार , *सिख प्लान और सिख्स इन एक्शन पर टिप्पणी*, लाहौर: गवर्नमेंट प्रिंटिंग प्रेस , 1948।
3. सलीम उल्लाह खान , *द जर्नी टू पाकिस्तान: ए डाक्यूमेंटेशन ऑन रिफ्यूजीज़ ऑफ 1947*, इस्लामाबाद: नेशनल डाक्यूमेंटेशन सेंटर, 1993।
4. पंजाब के संदर्भ में क्षेत्रीय राजनीति की ओर झुकाव में प्रमुख इतिहासकार थे: इयान टैलबॉट औरडेविड गिल्मार्टिन।
टैलबॉट ने 1937 से 1946 के बीच पंजाब मुस्लिम लीग की परिवर्तनशील स्थिति को उजागर किया।
यह सफलता पाकिस्तान के निर्माण में निर्णायक थी।
○ इयान टैलबॉट , *पंजाब एंड द राज* , नई दिल्ली: मनोहर, 1988।
○ डेविड गिल्मार्टिन , *एम्पायर एंड इस्लाम: पंजाब एंड द मेकिंग ऑफ पाकिस्तान* ,

- बर्कले: यूनिवर्सिटी ऑफ कैलिफ़ोर्निया प्रेस, 1988।
5. कृष्ण कुमार, "पार्टिशन इन स्कूल टेक्स्टबुक्स: ए कंपैरेटिव लुक एट इंडिया एंड पाकिस्तान", पुस्तक: पंग्स ऑफ पार्टिशन, खंड II, संपादक: एस. सेत्तर और इंदिरा बैप्तिस्टा गुप्ता, नई दिल्ली: मनोहर, 2002, पृष्ठ 17-28।
 6. रंजीत गुहा (संपा.), *सबाल्टर्न स्टडीज़ I: राइटिंग्स ऑन साउथ एशियन हिस्ट्री एंड सोसाइटी*, दिल्ली: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 1982।
 7. *सबाल्टर्न स्टडीज़ ग्रुप* —एक इतिहासकारों का समूह, जो वर्ग, जाति, लिंग आदि के सबाल्टर्न (बंचित) विषयों पर काम करता था। यह समूह रंजीत गुहा द्वारा शुरू किया गया था और 1980 के दशक में कई प्रभावशाली संकलन प्रकाशित हुए।
कुछ प्रमुख कृतियाँ:
 - *Subaltern Studies* (5 खंड),
 - शाहिद अमीन, *बेंट मेटाफर, मेमोरी: चौरी-चौरा, 1922-1992*,
 - डेविड अनोल्ड, "ग्राम्थी एंड पीज़न्ट सबाल्टर्निटी इन इंडिया", *Journal of Peasant Studies*, खंड 11, अंक 4 (1984), पृष्ठ 155-77।
 8. करेन एंगल, "फेमिनिज़्म एंड इट्स (डिस)कॉन्टेंट्स: क्रिमिनलाइज़िंग वारटाइम रेप इन बोस्निया एंड हर्ज़ेगोविना", *The American Journal of International Law*, खंड 99, अंक 4, अक्टूबर 2005, पृष्ठ 718-816 (विशेषकर पृष्ठ 778)।
 9. ऋतु मेनन और कमला भसीन, *बॉर्डर्स एंड बाउंड्रीज़: वीमेन इन इंडिया 'ज़ पार्टिशन*, न्यू जर्सी: रटगर्स यूनिवर्सिटी प्रेस, 1998, पृष्ठ 63, फुटनोट 34।
 10. वही लेखकद्वय, साथ ही देखें: "रिक्वरी, रैप्चर, रेसिस्टेंस: द इंडियन स्टेट एंड द अबडक्शन ऑफ वीमेन ड्यूरिंग पार्टिशन", *Economic and Political Weekly*, खंड 28, अंक 17, 24 अप्रैल 1993, पृष्ठ 2-11।
 11. उर्वशी बुटालिया, *द अदर साइड ऑफ साइलेंस: वॉयसेज़ फ्रॉम द पार्टिशन ऑफ इंडिया*, नई दिल्ली: पेंगुइन, 1998।
 12. वीणा दास (संपा.), *मीनर्स ऑफ वॉयलेंस: कम्युनिटीज़, रायट्स एंड सर्वाइवर्स इन साउथ एशिया*, ऑक्सफोर्ड: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 1990।
 13. जोन सैंगस्टर, "टेलिंग आवर स्टोरीज़: फेमिनिस्ट डिबेट्स एंड द यूज़ ऑफ ओरल हिस्ट्री", संपा.: रॉबर्ट पर्स और एलिस्टेयर थॉमसन, *The Oral History Reader*, लंदन: रूटलेज, 1998, पृष्ठ 87-100।
 14. शीला रोबोथम, *हिडन फ्रॉम हिस्ट्री*, लंदन: प्लूटो प्रेस, 1973; साथ ही देखें: सैंगस्टर, 1998, पृष्ठ 87-100।
 15. पाओला बाचेत्ता, "रीइंटरोगेटिंग पार्टिशन वॉयलेंस: वॉयसेज़ ऑफ वीमेन/चिल्ड्रेन/दलित्स इन इंडिया 'ज़ पार्टिशन", *Feminist Studies*, खंड 26, अंक 3, पतझड़ 2000, पृष्ठ 567-585।